एकता परिषद राहत अभियान

01-08 जून 2020 संस्करण क्रमांक -13

संपादकीय

कोरोना महामारी की दस्तक के बीच घोषित लॉक डाउन, देश के अलग अलग राज्यों में खुले आसमान के नीचे दिन रात गुजारने वाले प्रवासी मजदूरों के लिए सबसे कठिन समय था। दिनभर की मजदूरी करने के बाद शाम को खाद्य सामग्री की व्यवस्था कर चुल्हे जला कर पेट की भूख बुझाने का इंतजाम करने वाले लाखों मजदूरों की हकीकत नजर अंदाज करते हुए सरकार केवल कानून व्यवस्था बनाये रखने के फर्ज में जुटी रही। लेकिन मजदूरों की जमीनी हकीकत का अंदाजा तब लगा जब लाखों भूखे प्यासे संसाधन विहीन मजदूर घर वापिसी के लिए सड़कों पर आ गए। यह कठिन समय लॉक डाउन के एक सप्ताह तक रहा और तब सरकार की समझ में आया कि इन असहाय मजदूरों को रोकना कठिन है। इस दौरान कानून व्यवस्था के नाम पर सुरक्षा बलों ने पैदल-पैदल घर लौट रहे मजदूरों को कई किलोमीटर के लंबे रास्ते से जाने के लिए भी विवश किया।

धीरे धीरे देश जागा,देश की संवेदनाए जागी और वह मध्यम वर्ग जागा जिनके बच्चे देश के अलग अलग राज्यों के शैक्षणिक संस्थानों या होस्टलों में फंसे थे और उन्होंने सरकार पर दबाव बना कर बच्चों को वापिस लाने के लिए संबंधित सरकारों को राजी किया। इसका प्रभाव निश्चित रूप से पैदल-पैदल घर लौट रहे मजदूरों की घर वापिसी के लिए संबधित सरकारों को सोचने पर विवश किया। लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी फिर भी राज्य सरकारें सक्रिय हुई और उन्होंने अपने राज्यौं के मजदूरों की सुरक्षित वापिसी के कई कदम उठाए जिसकी बजह से बड़ी संख्या में मजदूरों की सुरक्षित घर वापसी संभव हो सकी ।

इस बीच केंद्र सरकार ने 8 करोड़ प्रवासी मजदूरों को दो महीने का निःशुल्क राशन उपलब्ध कराने की घोंषणा कर दी। ये 8 करोड़ की संख्या योजना आयोग द्वारा उल्लेखित 14 करोड़ प्रवासी मजदूर होने से भिन्न है। लेकिन कौन किस राज्य में प्रवासी मजदूर है यह तय करने का काम राज्य सरकारों का है। अब राज्य सरकारों को तय करना है कि उनके राज्य में कितने प्रवासी मजदुर बाहर गए थे, ताकि उनको केंद्र सरकार द्वारा घोषित सहायता मिल सके। इस संबंध में मध्य प्रदेश सरकार ने 27 मई 2020 को एक आदेश निकाला जिसमें कहा गया कि 2 जून 2020 तक ग्राम पंचायत के सचिव प्रवासी मजदूरों की जानकारी मुख्यमंत्री श्रमिक पोर्टल पर लोड करेंगे। श्रमिको के लिए भी कई दस्तावेजों को लोड करने के निर्देश भी दिए गये। 2 जून 2020 की शाम तक मध्य प्रदेश में 6 लाख के लगभग मजदूरों का पंजीकरण हुआ। कम पंजीकरण होने की बजह से सरकार ने 6 जून तक पंजीकरण की तारीख को बढ़ाया है, लेकिन इससे बहुत अधिक मजदूरों के पंजीयन की संभावना नहीं हैं। प्रवासी मजदूरों की वापिसी पर मध्य प्रदेश सरकार ने 15 से 18 लाख तक मजदूरों की वापिसी के आंकड़े उस समय पर मीडिया में दिए थे जबकि ये भी अधिकृत आंकड़े नहीं है लेकिन फिर भी पंजीकृत श्रमिकों की संख्या वास्तव में 30 प्रतिशत से अधिक नहीं है ।

श्योपुर जिले में सम्पन्न प्रवासी मजदूरों के पंजीकरण एवं वास्तविक पलायन पर गए मजदूरों की जब वास्तविक स्थिति जानने के लिए जब एक दर्जन गांवों का सर्वे किया गया तब पता लगा कि कई कारणों से बड़ी संख्या में मजदूर पंजीकरण से छूट गए हैं। आधार कार्ड, यूनिक पहचान पत्र आदि दस्तावेजों के अभाव में बहुत से मजदूरों का पंजीयन नहीं हो सके हैं। कुछ पंचायत के सचिव या रोजगार सहायक की निष्क्रियता भी पंजीयन करने में बाधक रही है।

कुल मिला कर पंजीयन को लेकर कई जनसंघटन, सामाजिक समूह अपनी अपनी चिंताएं व्यक्त कर चुके हैं। अब जरूरत इस बात की है कि जनसरोकार का काम करने वाली सभी संस्थाये तथा सरकार मिल कर मजदूरों के हितों के लिए काम करें तो सभी मजदूरों की उनके अधिकारों तक पहुंच बनाई जा सकती है। कोई मजदूर नहीं छूटेगा, कोई वंचित नहीं रहेगा, सबको काम मिलेगा, सम्मान मिलेगा,हिम्मत और अभिमान मिलेगा ।

मजदूर एकता जिंदाबाद ।

केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने पोषण समृद्ध ग्राम पारोन में एकता परिषद के वॉलटियर्स का किया सम्मान और वितरित की राशन किट।

सुश्री शबनम अफगानी,श्योपुर

जिला-श्योपुर। किसान कल्याण कृषि विकास, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने महात्मा गांधी सेवा आश्रम श्योपुर के तत्वाधान में जिले के आदिवासी विकासखण्ड कराहल के पास स्थित ग्राम परोन में पोषण समृद्ध ग्राम पारोन में पहुंचकर आदिवासी परिवारो को भोजन सामग्री की 50 किट प्रदान कीं। साथ ही बच्चो को पोषण आहार के 40 पैकेट उपलबध कराये। कार्यक्रम में मुख्यरुप से एकता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रनसिंह परमार,गाँधी सेवा आश्रम श्युपर के श्री जयसिंह जादौन सहित श्योपुर जिला प्रशाशन के लोग उपस्थित थे। इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिहं तोमर ने नोबल कोरोना वारयस कोविड-19 के अंतर्गत सक्रिय कार्य करने एवं आदिवासी परिवारो को भोजन सामग्री उपलब्ध कराने पर एकता परिषद के वॉलटियर्स का कार्यक्रम में सम्मान किया। साथ ही कार्यक्रम में जयसलमेर एवं दमनदीप से मजदूरी कर लौटे श्री नीरज, श्री अनिल, श्री दीपक को भोजन सामग्री किट उपलब्ध कराई गई।

केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने इस अवसर पर कहा कि देश में कोरोना महामारी से लोग झूझ रहे है। कोरोना संक्रमण से निजात दिलाने की दिशा में केन्द्र एवं राज्य सरकार निरतर प्रयास कर रही है। उन्होने कहा कि एकता परिषद के माध्यम से सहरिया क्षेत्र में कुपोषण निदान की दिशा में जिला प्रशासन का सहयोग किया जा रहा है। साथ ही एकता परिषद के वॉलटियर्स द्वारा कोरोना के संकट के दौरान आदिवासी परिवारो को भोजन आदि की सुविधा की दिशा में निःशुल्क राशन वितरण कर रहे है। एकता परिषद का यह कार्य सराहनीय है। उन्होने कहा कि कोरोना संक्रमण के मद्देनजर आदिवासी परिवारो को मास्क, सेनेटाईजर का उपयोग डेली दिनचर्या में लाने के लिए विभागीय अधिकारी और एकता परिषद के वॉलटियर्स समझाइश दे। जिससे कोरोना संक्रमण से आगे भी निजात आवश्य मिलेगी।

उन्होने कहा कि सहरिया परिवारो की महिला मुखिया को बच्चो में कुपोषण निदान की दिशा में एक हजार रुपये की राशि जिला प्रशासन द्वारा आदिम जाति कल्याण विभाग के माध्यम से प्रति माह प्रदान की जा रही है। इस राशि से सहरिया परिवारो की मुखिया अपने बच्चो को पोषित करने में उपयोग कर सकती है।

उन्होने कहा कि कोरोना संक्रमण के दौरान अन्य राज्यो में फसे मजदूरो की वापसी अपने घर पर हो रही है। यह सिलसिला निरंतर चल रहा है। साथ ही प्रवासी मजदूरो को मनरेगा योजना कें अंतर्गत रोजगार देने की दिशा में काम पर लगाया गया है। श्योपुर जिले में जिला पंचायत

के सीईओ के माध्यम से इस योजना के कार्य कराये जा रहे है। जिसमें तालाब गहरीकरण,चैकडैम के कार्य शामिल है। मनरेगा के लिए सरकार ने बजट के अलावा स्पेशल पैकेज दिया है। जिससे मजदूर अपनी पंचायत में ही काम प्राप्त कर आर्थिक दिशा में आगे बढ सकेगे।

ग्वालियर–चम्बल क्षेत्र से...

एकता परिषद संगठन और प्रशासन के संयुक्त प्रयास से प्रवासी मजदूर एवं वंचित समुदाय के लिये किये गये सकारात्मक कार्य।

श्रीमति प्रीति तिवारी,भोपाल

हम चलेंगे साथ–साथ

कोरोना महामारी ने जहां समाज के हरेक वर्ग को कमोवश प्रभावित किया और सबसे अधिक लोग मानसिक, शारीरिक और आर्थिक रुप से परेशान हुये, वहीं इस संकट की घड़ी में देश के प्रत्येक नागरिक ने जिस प्रकार से एकजुटता का प्रदर्शन किया वह पूरे विश्व के लिये एक मिशाल है।'एकता में बल है' जैसे वाक्यों को चरितार्थ करता हुआ पिछले लगभग तीन महीने का समय हमें बहुत कुछ सीखा गया। आज नकारात्मकता के बीच सकारात्मक तत्वों की खोज आवश्यक है।

देश के अन्य राज्यों की तरह मध्यप्रदेश भी एक राज्य है जहां संगठन, समाज और प्रशासन के मिले-जुले प्रयास से वंचितों, गरीबों, महिलाओं, बच्चों, प्रवासी मजदुरों, घुमन्तु जनजातियों और

ऐसे ही अल्प संसाधनों के बीच जीवन जीने वाले लोगों के कष्टों को कम करने में सफलता हासिल हुई है। केवल प्रवासी मजदूरों को उनके अपने घर तक पहुॅचाने के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि अपने घर पहुॅच जाने के बाद उनके स्वास्थय का ध्यान रखने में, उन्हें राशन सामग्री देकर उनके भोजन के संकट को दूर करने में, उन्हें विभिन्न योजनाओं के माध्यम से आर्थिक सहायता देकर मानसिक रुप से संतुष्ट रखने में, मजदूरों को उनके निवास के आस–पास ही काम दिलवाने में सरकार और संगठन ने जिस सूझ–बूझ से काम किया है उसकी प्रषंसा करनी ही होगी। आज गांव के लोग कोरोना महामारी के विकराल रुप से बचने के प्रयास स्वयं करने लगे हैं। समाज का प्रत्येक वर्ग जागरुक हुआ है और कोरोना संकट के बीच अपने कामों को फिर से प्रारंभ करना शुरु कर दिया है।

मुरैना जिला कलेक्टर महोदया जी से पहाड़गढ़ क्षेत्र में सयुंक्त राहत कार्य के लिये संवाद एंव अशोकनगर जिला कलेटर महोदया जी से संवाद

संगठन और प्रशासन के छोटे-छोटे सकारात्मक प्रयास समाज में एक नई उर्जा का संचार कर रहे हैं।

- कोरोना वायरस के फैलने की सूचना आते ही देशव्यापी बन्द की घोषणा की गई और यह घोषणा होते ही ग्वालियर-चम्बल क्षेत्र में संगठन के प्रत्येक सदस्य सक्रियता के साथ प्रवासी मजदूरों से सम्पर्क करना प्रारंभ किये। संगठन को जैसे ही इस बात का अहसास हुआ कि अब प्रवासी मजदूरों की घर वापसी आवश्यक है तो संगठन के वरिष्ठ साथियों ने शासन-प्रशासन से संवाद प्रारंभ कर दिया। इतना ही नहीं, जिले में संगठन की ओर से प्रवासी मजदूरों की सूची जिला स्तरीय प्रशासनिक अधिकारियों को दिया जाने लगा। प्रवासी मजदूरों के लिये उनके प्रवास के स्थान पर ही राषन दिलवाने से लेकर उनके घर वापसी के लिये मध्यप्रदेश के शासन-प्रशासन पर दबाव बनाया गया। सभी जिलों के प्रशासनिक अधिकारियों से निवेदन किया गया कि उन राज्यों, जहां मध्यप्रदेश के एक भी मजदूर काम करने के लिये गये हैं, के प्रशासन से सम्पर्क करके प्रवासी मजदूरों को घर वापस लाने का कुछ रास्ता निकालें।

इस प्रयास का परिणाम यह हुआ कि अप्रेल 2020 के अन्त में बड़े पैमाने पर प्रवासी मजदूर ग्वालियर-चम्बल क्षेत्र में लौटने लगे। इसी क्रम में एकता परिषद, गुना जिले के कार्यकर्ताओं के द्वारा जिन लगभग 650 प्रवासी मजदूरों, जो फरवरी और मार्च के महिनें में अपने जिले से बाहर काम की तलाश में गये थे, की सूची प्रशासन को उपलब्ध कराई गई थी, उनके लिये प्रशासन के द्वारा राजस्थान सरकार से बातचीत की गई। संगठन और प्रशासन के संयुक्त प्रयास से आज वे सभी प्रवासी मजदूर अपने-अपने घर वापस आ चुके हैं।

- कोरोना काल में व्यवस्थित तरीके से कार्य हो सके इसके लिये जिला प्रशासन, शिवपुरी के द्वारा एक कोर टीम का गठन किया गया था। इस कोर टीम में जिला स्तरीये विभिन्न विभाग के प्रतिनिधियों के साथ-साथ एकता परिषद जनसंगठन के स्थानीय सदस्य को भी रखा गया है। इस टीम की सदस्यता प्राप्त होने से जिले की समस्याओं को प्रशासन के समक्ष रखने और उसका त्वरित समाधान कराने में बहुत मदद मिली है।
- ग्वालियर, शिवपुरी, अशोकनगर, गुना आदि जिलों में कोरोना राहत के तहत दी जाने वाली 500-500 रुपये की आर्थिक मदद, प्रवासी मजदूरों को दिये जाने वाले 1000 रुपये की मदद और 1000-1000 रुपये की कुपोषण राषि को समय से दिलवाने में संगठन की अहम् भूमिका रही है। इस प्रयास से ग्वालियर-चम्बल क्षेत्र के प्रवासी मजदूरों के साथ-साथ हजारों महिलाओं के खाते में आर्थिक सहयोग की राशि उपलब्ध हो सकी है।

- इतना ही नहीं लॉकडाउन की घोषणा के साथ ही यह भी घोषणा की गई कि तीन महिने का अग्रिम राशन सभी राशन कार्डधारियों में उपलब्ध कराया जायेगा। इस घोषणा के तुरत बाद एकता परिषद के साथी उन गरीब लोगों की सूची बनाना आरंभ किये जिनके पास राशन कार्ड नहीं था और इस संबंध में प्रशासन से संवाद करके उन तमाम लोगों को भी राशन दिलवाया गया जिनके पास राशन कार्ड अबतक नहीं है और वे गरीब हैं।

उदाहरण के लिये कोलारस तहसील के धर्मपुरा गांव के 85 परिवारों के संकट से प्रशासन को अवगत कराने का काम संगठन के द्वारा किया गया और प्रशासन की ओर से त्वरित कार्यवाही करते हुये जिला कलेक्टर के द्वारा 10 क्विंटल गेहुँ उपलब्ध कराया जिसे संगठन के साथियों द्वारा धर्मपुरा गांव के 85 परिवारों के बीच वितरित किया गया। इसी प्रकार से धर्मपुरा गांव के पास ही घुमंतु जनजाति के 30 परिवार निवास कर रहे थे जिनके पास राशन कार्ड नहीं था। जब इन समस्याओं को संगठन के स्थानीय साथियों के द्वारा प्रशासन के समक्ष उठाया गया तो तत्काल प्रशासन की तरफ से 4 क्विंटल गेहुँ उपलब्ध कराया गया जिससे इन 30 परिवारों को राशन दिया जा सका।

- ज्येष्ठ माह के भीषण गर्मी को देखते हुये ग्वालियर–चम्बल क्षेत्र के शिवपुरी जिले में प्रशासन ने लगभग 4 क्विंटल शक्कर मिला हुआ सत्तु एकता परिषद को उपलब्ध कराया। जिले के स्थानीय कार्यकर्ताओं द्वारा अबतक 300 गरीब वंचित परिवारों के बीच यह सत्तु वितरित किया जा चुका है।

-

  ग्वालियर क्षेत्र के पाटई, बराना, रामपुरा, बरसाना, आरोन और मोहना गांव के 594 लोगों का मनरेगा के तहत काम देने के लिये आवेदन 8 मई 2020 को लगाया गया था। इन लोगों में से 365 लोगों को अबतक मनरेगा के तहत काम दिया जा चुका है।

इस प्रकार कई छोटे–छोटे उदाहरण हैं जिसमें संगठन और प्रशासन ने मिलजुल कर काम किया जो पात्र व्यक्ति, परिवार के पास सहायता पहुँच पाया।

अभिनब पहल,

70 गांव की 2000 से अधिक बालिकाओ को सिखाया जा रहा सोशल डिस्टेंसिग।

श्रीजयसिंह जादोन,श्योपुर

जागरूकता हेतु नये तरीकों और पोस्टरों से बालिकाएं दे रही है सन्देश, तो कही छोटे छोटे समूह में कार्यकर्ता सिखा रहे हैं सोशल डिस्टेंसिंग।

जिला श्योपुर। विगत 04 वर्षो से आदिवासी अंचल कराहल क्षेत्र और बड़ौदा क्षेत्र में सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछडी हुई बेटीयों को शिक्षित करने का कार्य महात्मा गांधी सेवा आश्रम द्वारा निरन्तर किया जा रहा है जिसमें स्थानीय शिक्षक शिक्षिकाओं द्वारा बालिकाओं को शिक्षित कर उन्हे समाज की मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया जा रहा है

वर्तमान में 70 गांवों में 74 बालिका शिक्षा केन्द्रो का संचालन किया जा रहा है। इन केन्द्रों में 06 से 14 वर्ष की 2005 बालिकाओं को निःशुल्क शिक्षा दी जा रही है। वर्तमान में कोरोना वायरस से जहॉ पुरे विश्व में हाहाकार मचा हुआ है वहां भारत भी इस महामारी से अछूता नहीं है। इस महामारी के कारण जहॉ समस्त उधोग, कारखाने, दुकाने, विद्यालय सब

बन्द हो गये है और ये विमारी दिनो–दिन शहरों से लेकर गांवों में भी अपने पैर पसारने लगी है। इस महामारी के बारे में पूर्ण जानकारी न होने के कारण लोग इसकी चपेट में आ रहे है।

महात्मा गांधी सेवा आश्रम की अभिनव पहल

70 गावों की दो हजार से अधिक बालिकाओ को सिखाया जा रहा सोसल डिस्टेंसिग : जयसिंह जादोन

श्योपुर। महात्मा गांधी सेवा आश्रम संस्था के प्रबंधक जयसिंह जादौन ने बताया कि विगत 04 वर्षों से आदिवासी अंचल कराहल क्षेत्र और बड़ौदा क्षेत्र में सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई बेटियों को शिक्षित करने का कार्य महात्मा गांधी सेवा आश्रम द्वारा निरन्तर किया जा रहा है जिसमें स्थानीय शिक्षक शिक्षिकाओं द्वारा बालिकाओं को शिक्षित कर उन्हे समाज की मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया जा रहा है

वर्तमान में 70 गांवों में 74 बालिका शिक्षा केन्द्रों का संचालन किया जा रहा था इन केन्द्रों में 06 से 14 वर्ष की 2005 बालिकाओं को निःशुल्क शिक्षा दी जा रही है। वर्तमान में कोरोना वायरस से जहाँ पूरे विश्व में हाहाकार मचा हुआ है वहां भारत भी इस महामारी से अछूता नहीं है। इस महामारी के कारण जहाँ समस्त उद्योग, कारखाने, दुकाने, विद्यालय सब बन्द हो गये है और ये बिमारी दिनो-दिन शहरों से लेकर गांवों में भी अपने पैर पसारने लगी है। इस महामारी के बारे में पूर्ण जानकारी न होने के कारण लोग इसकी चपेट में आ रहे है।

इसके लिये महात्मा गाँधी सेवा आश्रम ने निर्णय लिया कि बालिका शिक्षा कार्यक्रम के कार्यकर्ताओं के माध्यम से गांव-गांव में जाकर तथा घर घर जाकर कोरोना वायरस के लक्षण एंव इससे बचाव के तरीकों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाया जाये। और एक अभियान की शुरूआत की है जिसके तहत कार्यकर्ता गांव-गांव में जाकर सामाजिक दूरी का पालन करते हुये मोबाईल विडीयो, सहायक शिक्षण सामग्री, चार्ट, पोस्टर के माध्यम से लोगो को कोविड-19 के प्रति जागरूक कर रहे है।

साथी ही हाथ धुलाई कार्यक्रम को भी अभियान के रूप में चला रहे है

इसी क्रम में कराहल क्षेत्र के अन्तर्गत हरीपुरा, अगरा, बरगंवा, पहाडी, ढेंगदा, कलारना, कलमी गांव में जागरूकता अभियान चलाया गया। इस अभियान में केन्द्र के शिक्षक संजय प्रजापति, नरेश वर्मा, आरती राय, कुसुम मथूरिया समन्वयक पुनीत शर्मा उपस्थित रहे

इसके लिये महात्मा गाँधी सेवा आश्रम ने निर्णय लिया कि बालिका शिक्षा कार्यक्रम के कार्यकर्ताओं के माध्यम से गांव–गांव में जाकर तथा घर घर जाकर कोरोना वायरस के लक्षण एंव इससे वचाव के तरीकों को अधिक से अधिक लोगो तक पहुँचाया जाये और एक अभियान की शुरूआत की है जिसके तहत कार्यकर्ता गांव–गांव में जाकर सामाजिक दूरी का पालन करते हुये मोबाईल विडीयो, सहायक शिक्षण सामग्री, चार्ट, पोस्टर के माध्यम से लोगो को कोविड–19 के प्रति जागरूक कर रहे है। साथी ही हाथ धुलाई कार्यक्रम को भी अभियान के रूप में चला रहे है इसी क्रम में कराहल क्षेत्र के अन्तर्गत हरीपुरा, अगरा, बरंगवा, पहाडी, ढेंगदा, कलारना, कलमी गांव में जागरूकता अभियान चलाया गया। इस अभियान में केन्द्र के शिक्षक संजय प्रजापति, नरेश वर्मा, आरती राय, कुसुम मथूरिया समन्वयक पुनीत शर्मा उपस्थित रहे

राशन किट का वितरण

जिला–धार। कुक्षी, धार में गुजरात और सूरत से वापिस लोटे 82 प्रवासी मजदूरों को एकता परिषद धार ने 15 दिन का राशन किट देकर मदद की गई।स्रोत–कोरोना समूह।

श्रमिक बच्चों के लिये वस्त्र वितरण

जिला–धार। Prativa Syntex Ltd , pithampur Dhar के सहयोग से कुक्षी, धार के 21 गॉव में 700 टी–शर्ट वितरित की गई। समन्वयक श्री प्रशान्त जी ने बताया कि ये सभी वह परिवार थे जो बच्चों के लिये वस्त्र खरीदने में असमर्थ या परेशानी में थे। सर्वे कर इन परिवारों का चयन किया गया। नई टी–शर्ट पहिनकर बच्चे बहुत खुश थे। स्रोत–कोरोना समूह।

राशन वितरण

जिला–उमरिया। एकता परिषद मध्यप्रदेश तत्वाधान में ब्लाक – मानपुर, जिला उमरिया में कोविड–19 से प्रभावित 60 परिवारों को राहत खाद्यान्न वितरण किया गया है । इस अवसर पर एकता परिषद जिला –उमरिया के समस्त साथी एवं मुखिया बंधु उपस्थित रहे।स्रोत–कोरोना समूह।

जिला–रायसेन। महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा एंव एकता परिषद मध्यक्षेत्र की टीम ने संयुक्त राहत अभियान के तहत 72 निराश्रित परिवारों को आटा,दाल,तेल,नमक और मसालों का वितरण कर मदद की।

राशन वितरण

जिला–शहडोल। जयसिंह नगर ब्लॉक के 10 गॉव के श्रमिक, निराश्रित एवं एकल महिला परिवारों को गॉव–गॉव जाकर शिविर के माध्यम से सोशल डिस्टेंसिंग के साथ 78 परिवारों को राशन उपलब्ध कराया गया।स्रोत–कोरोना समूह।

जिला–विदिशा। एकता परिषद मध्यक्षेत्र टीम द्वारा गंजबासोदा के ग्राम सत्ताखेड़ी, जाजोन, लमन्या, भिलाय और नरोदा में पलायन से वापस लोटे 71 प्रवासी श्रमकि परिवार जिनके पास खाने के लिये कुछ नही था उन्हे महातमा गांधी सेवा आश्रम के सहयोग से 15 दिन का राशन दिया गया। स्रोत–कोरोना समूह।

राशन वितरण

जिला–मुरैना। मुरैना जिले के जौरा ब्लॉक के नरहेला, पातई का पुरा गॉव के 25 दिव्यांग, एकल महिला और निराश्रितों के लिये 15 दिनों का राशन आटा, दाल, तेल मसाले आदि का वितरण कर सहयोग दिया गया। स्रोत–कोरोना समूह।

जिला–श्योपुर। आदिवासी अंचल कराहल में लॉकडाउन वन से ही वंचितों, श्रमिकों और निराश्रितों के लिये गांधी सेवा आश्रम श्योपुर और एकता परिषद टीम राहत सामग्री वितरण का कार्य कर रही है। इसी कड़ी में 3 और 4 जून को जाखदा ओर कपूरा गांव में राशन वितरित किया गया।स्रोत–कोरोना समूह।

बीज वितरण

जिला–दमोह। एकता परिषद कटनी एवं मानव जीवन विकास समिति द्वारा तेदूखेडा जिला दमोह के ग्रामो में अरहर बीज बितरण करने की तैयारी चल रही। इसके साथ–साथ मक्का, तिली, उडद, की मिश्रण खेती करने का प्रयास श्री निर्भय सिंह जी के मार्ग दर्शन में चल रहा है जिसका उद्धेश्य कृषि आधारित कार्यो व खेतिहर मजदूरी के माध्यम से कोरोना से आये संकट से लोगों को निजात दिलाया जा सके।

मास्क वितरण

जिला–झाबुआ। गुजरात और सूरत से झाबुआ, रामा ब्लॉक और पारा के आसपास बहुत अधिक संख्या में प्रवासी मजदूरों की वापसी हुई है, समुदाय में किसी प्रकार का संक्रमण न फैले इसके लिये जिला संयोजक श्रीमति दुर्गा पवार घर घर जाकर मास्क वितरण कर रही हैं। साथ ही कोरोना से बचने के उपायों को बताया जा रहा है।

छत्तीसगढ़

राशन वितरण

जिला–कोरिया। ग्राम महरौली,घटाई और रापा के 30 निराश्रित परिवारों के लिये एकता परिषद छत्तीसगढ़ एवं प्रयोग समाज सेवी संस्था तिल्दा के नेतृत्व में चावल दाल आलू प्याज तेल हल्दी नमक का किट तैयार कर पलायन में गए आश्रित परिवारों को दिया गया। स्रोत–कोरोना समूह।

जिला–सुरजपुर। इसी प्रकार सूरजपुर जिले के ब्लाक रामानुजनगर के गांव अर्जुनपुर, परशुराम पुर , रामपुर ,सागरपुर, मकरबंधा से पलायन में गऐ हुए उनके 20 आश्रित परिवारों को चावल, दाल, आलू, प्याज, तेल, नमक, आदि का किट वितरण किया गया।स्रोत–कोरोना समूह।

ऑड़िसा

श्रमदान कैम्प की तैयारी

जिला– कालाहांडी। ऑड़िसा राज्य के कालाहांडी जिले के ग्राम पल्सापदर गॉव में श्रमदान से जल संरक्षण एवं गॉव तक कच्ची रोड के लिये श्रमदान कैम्प का आयेजन किया जायेगा। जिला संयोजक सरोज भाई ने बताया कि हमने गॉव के सभी लोगों से बातचीत कर पलायन से लोटे श्रमिको की सूची तैयार कर ली और आगामी हफते में अलग–अलग गॉव में शोसल डिस्टेंसिग के साथ काम प्रारम्भ कर दिया जायेगा।

असम

एकता परिषद के हस्थक्षेप के बाद मिला ऑनलाइन परमिट फिर भी कई दिनो तक केरल में रह रहे असम मूल के प्रवासी मजदूरों घर जाने के लिये करना पड़ा कई दिनों इन्तजार।

सुश्री नयनतारा, असम।

केरल में रहने वाले असम मूल के 25 प्रवासी मजदूरों ने बस से असम आने के लिए असम सरकार से परमिट लेने के लिये आवेदन की 4-5 बार आनलाइन प्रक्रिया की लेकिन बार 2 आवेदन रिजेक्ट आने के बाद सभी परेशान थे। उसी समय मजदूर वर्ग के लीडर कमलकान्त ने एकता परिषद की नयनतारा जी से फोन पर मदद मांगते सभी समस्याओं के बारें में बताया। नयनतारा जी ने एकता परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारी से इन मजदूरों की सभी समस्याऐ बताई। तत्पश्चात् एकता परिषद टीम ने केरल के महामहिम राज्यपाल को मजदूरों के बस परमिट के लिए पत्र लिखकर अनुरोध किया। परिणाम स्वरुप राज्यपाल आफिस से अर्नाकुलम जिला के कलेक्टर को आदेश पहुंचते ही मजदूर वर्ग के लीडर को बुलाकर उनकी समस्याएं सुनी गई और मजदूरों के सारे अभिलेख लेकर संबधित प्रशासन के प्रतिनिधि ने सरकारी नियमानुसार आन लाइन परमिट निकालकर दे दिया और उस क्षेत्र के थाना को भी सूचना दे दी गई।

सभी मजदूर खुश थे लेकिन जिस बस की व्यवस्था की गई थी उसके मालिक आज-कल करते हुए 6-7 दिनों तक टालता रहा। पुनः प्रवासी मजदूरों ने हमसे सम्पर्क कर सारी समस्याएं बताते हुए कहा कि- परमिट की तिथि इनवैलिड होने के लिए केवल 3 दिन ही शेष रह गया है,यदि गाड़ी मालिक ऐसे ही टालता रहा तो हमारे इस परमिट का कोई मतलब नहीं रहेगा और हम सभी का असम आना संभव नहीं हो पायेगा और नयी प्रक्रिया करने में बहुत दिन लग जाएगें। रहने-खाने की व्यवस्था भी जटिल हो जाएगी।

एकता परिषद टीम ने उन लोगों से गाड़ी मालिक का फोन नं लेकर बस मालिक से सीधा संपर्क किया और प्रवासी मजदूरों की सारी समस्याएं बताते हुए कहा कि तत्काल बस की व्यवस्था करें। यदि आप ऐसा नही करते हैं आपकी ऑनलाइन शिकायत प्रशासन को की जायेगी। हमारी बात सुनकर गाड़ी मालिक ने हमे आश्वस्त किया कि आज रात्रि ही गाड़ी मजदूर वर्ग के आवास के पास पहुंच जाएगी और कल ही असम के लिए गाड़ी प्रस्थान करेगी।

28 मई को केरल. अर्नाकुलम से चलकर सभी प्रवासी मजदूर ,बस द्वारा असम के धुबरी जिला के छगलिया गेट 1 जून को पहुंच गये। असम प्रशासन ने केरल के बस को बार्डर से ही वापस भेज दिया। असम सरकार के बस की व्यवस्था लखीमपुर, ढेमाजी,तिनसुकिया जिला से संबंधित प्रवासी मजदूरों के लिए किया गया। ये सभी प्रवासी मजदूरों का 2 जून को रात्रि में हेल्थ चेकअप करवा कर अपने-अपने जिला के कोरंटाइन सेंटर्स में रख दिया है।

निरूसंदेह,इस उपलब्धि से हमारा आत्मविश्वास बढ़ा है।

लॉकडाउन की वजह से पुणे महाराष्ट्र राज्य से लोटी एकल महिला राजकुमारी अब रायपुर में ही ढूढ़ेगी काम।

श्रद्धा रमानी,रायपुर (छग.)

30 वर्षीय एकल महिला राजकुमारी भारद्धाज जो अपना घर छोड़ कर पुणे शहर चार पैसे कमाने गयी थी, ताकि अपना और अपने बूढ़े माँ बाप का ठीक से पालन–पोषण कर सकें। लेकिन लॉकडाउन में काम बंद हो गये तो लोटना पड़ा अपने गॉव।

राजकुमारी जी ग्राम भुरसुदा, ब्लॉक तिल्दा, जिला रायपुर (छ.ग.) की रहने वाली है, जो की अपने माता–पिता के साथ 6 साल से उनके निवास पर आश्रित थी क्यों कि इनकी पिछली जिंदगी की कहानी कुछ इस प्रकार रही कि 20 साल की उम्र में माता–पिता ने कुटेल गावं के एक परिवार में बेटी की शादी करवा कर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो गये, सब अच्छा चल रहा था और राजकुमारी के 3 बच्चे हो गए पर किस्मत ने कुछ और ही सोच रखा था उनकी शादी के 6 साल बाद ही तलाक हो गया, पति छोड़कर चला गया और बच्चे भी अपने पिता के साथ चले गए और रह गयी तो राजकुमारी अकेली।

माता–पिता के अलावा और कोई सहारा ना दिखनें पर वह अपने मायके भुरसुदा अपने माता–पिता के पास आ गई और उनके साथ ही अपना जीवन बिताने लगी पर अब और कितने दिन ऐसा चलता बूढ़े बाप पर ज़्यादा बोझ भी पड़ रहा था। राजकुमारी ने सोचा की, मैं भी अब काम करुँगी और अपने माँ–बाप का सहारा बनकर उनका पालन–पोषण करूंगी,, वैसे भाई तो है पर कोई काम का नहीं है वहाँ बस अपना देखता है। एक दिन राजकुमारी से मिलने उसकी मामाजी की बेटी अपने पति के साथ आई जो की पुणे में ही इड्ढा मसाला में काम करती थी, उसने बताया की पुणे शहर में बहुत काम है तुम भी साथ चलो वही काम करना हमारे साथ और कुछ ज्यादा न सोचते हुए राजकुमारी ने जाने का फैसला कर लिया। मजबूरी भी बड़ी अजीब है जो बूढ़े माँ–बाप को इस स्थिति में अकेले छोड़कर पुणे जाने को मजबूर करती है। 3 सालों से 5500 रुपये महीने की मजदूरी मिल रही थी। रहने को एक झुग्गी थी पर खाना का खुद को ही देखना पड़ता था। इतने कम वेतन में जो कुछ भी बच जाता है वो बूढ़े माँ–बाप को भेज देती।

आगे बढ़ते हुए राजकुमारी ये बताती है की 23 मार्च 2020 को काम बंद होने से ठेकेदार ने कह दिया कि काम न होने के कारण आप लोग अपने घर चले जाये पर लॉक डाउन के चलते अब ना तो जाने का कोई साधन रहा और ना ही भूखे पेट पुणे में रहने का आसरा रहा, जब तक सरकार कुछ दूसरा तरीका ना तय कर दे और साथ ही साथ कोरोना का डर भी सता रहा है और घर की याद भी आती है। सब देखते हुए ठेकेदार के मन में कुछ अच्छाई थीं, जो उन महिलाओं को 2 माह तक दाल,चांवल और आटा देकर राहत दिलवाने मे मदद की। उसने स्थानीय प्रशाशन से सम्पर्क किया औरँ पुलिस थाना में जा कर फॉर्म भरा। दो दिन बाद राज्य सरकार ने एक–एक बसों मे 22 लोगों को बैठा कर और पुरे तरह से सोशल डिस्टेंस का पालन कराते हुए महाराष्ट्रा के गोंदिया तक पॅहुचाया।

फिर वहाँ से एक ट्रक में बैठ कर वो लोग रायपुर तक पॅहुचें और पुलिस के देख–रेख में उन सबका जाँच हुआ उनको खाना खिलाया गया और फिर वहा से अपने–अपने जिलों के लिए ट्रकों में रवाना करवाया गया, यह सब में एक ये बात अच्छी थी की इन मजदूरों को कोई पैसे नहीं लगे यहाँ तक आने में।

जब राजकुमारी अपने ब्लाक तिल्दा पॅहुची तब उनका फिर से जाँच तिल्दा के स्वास्थ्य केन्द्र में हुआ और उनको 14 दिनों के लिए क्वारंटाइन में गुजरा।

पर अब आगें क्या ? यह राजकुमारी का चिंता का विषय है, उनकें पास ना तो अब नौकरी रही है और ना ही कोई दूसरा सहारा, जो राजकुमारी और उनकें परिवार का पालन–पोषण का साधन बन सकें।

राजकुमारी का यह कहना है की, इतने कम पैसों की नौकरी करनें के लिए वहा इतनी दूर अपने माता–पिता को छोड़कर नही जाना चाहती है। और यही आस–पास के शहर जा कर काम करेंगी और अपने बूढ़े माँ–बाप के साथ यही उनके पास रहने का सोच लिया है जो बहुत ख़ुशी की बात हैं, पर राजकुमारी जी के लिए यह एक बड़ी चुनौती भी है जिसकों राजकुमारी जी को पूरा करना हैं।

लोकडाउन ने छीना रोजगार.........बच्चों की परवरिश करना हुआ दूभर।

रामकुमार सिंह चौहान

श्योपुर जिले के आदिवासी अंचल कराहल के ग्राम गोठरा में 32 वर्षीय नेतराम आदिवासी पुत्र श्री कनीराम आदिवासी का परिवार कोरोना संकट में लोकडाउन में प्रभावित रहा। इनके परिवार मे कुल 4 सदस्य है जिसमे उसकी पत्नी अंगूरी बाई उम्र 28 वर्ष, 3 वर्ष का लड़का और 6 माह की नौनिहाल बच्ची शामिल है। वह और उसकी पत्नी अंगूरी बाई दैनिक मजदूरी करके जो भी पैसा कमाते है उससे ही अपना और अपने बच्चों का भरण पोषण करते है गांव मे प्रतिदिन मजदूरी का न मिल पाना भी एक समस्या है जिस दिन मजदूरी नहीं मिलती है उस दिन पेट भर भोजन मिल पाना भी दूभर हो जाता है। एक दिन की मजदूरी से गांव मे कई बार सप्ताह भर घर चलाना पड़ता है।

नेतराम मजदूरी के आभाव मे आर्थिक रूप से बहुत परेशानी का सामना कर रहा था गॉव में सरकार की तरफ से मनरेगा के काम चालू नहीं थे,मजबूरी में परिवार सहित उत्तरप्रदेश के आगरा जिले मे आलू की खुदाई के लिए पलायन का विचार किया। उसने सोचा था कि दोनों साथ मिलकर मजदूरी करेंगे तो कुछ अतिरिक्त पैसा मिलेगा जिससे कुछ वचत हो जाएगी और उससे बरसात के 4 महीने जब मजदूरी नहीं मिलेगी तब वह बचत से घर चला पायेगे इन सब बातो को ध्यान मे रखकर नेतराम अपने दोनों बच्चों और पत्नी अंगूरी बाई के साथ सहपरिवार आलू खुदाई के लिए उत्तरप्रदेश के आगरा जिले के बंदनी गांब मे पहुँच गया ।

बारिश बनी मजदूरी मे बाधा – नेतराम मजदूरी के आस मे उत्तरप्रदेश के आगरा जिले के बंदनी गांव पहुँच गया वहा नेतराम और उसकी पत्नी दोनों साथ मे आलू खुदाई का कार्य करने लगे और इसके एवज मे ठेकेदार द्वारा उन्हें मेहनताना के रूप 250-250 रुपये मिलने लगे कार्य करने के दौरान उसकी 3 माह की बच्ची की देखरेख उसका 3 वर्ष का लड़का करता था। शुरुआत के 4-5 दिन मजदूरी करने के बाद वहा का मौसम खराब होने लगा और बारिश होने लगी जिससे आलू खुदाई के कार्य मे बाधा होने लगी 1 बार बारिश होने के बाद 4 से 5 दिन मे खेत सूखने मे लगता और जिससे 5 दिन मे सिर्फ 1 दिन मजदूरी मिलने लगी जिस कारण वह मजदूरी से जो कुछ भी कमा पाते वह बारिश के कारण जिस दिन मजदूरी नहीं मिलती उन दिनों मे खत्म हो जाती इसी प्रकार पूरा एक माह इसी आस मे गुजर गया की अब उन्हें नियमित मजदूरी मिलने लगेगी और कुछ वचत होंगी।लेकिन भगवान को कुछ और ही मंजूर था।

लॉकडाउन ने छीना रोजगार – नेतराम ने बताया की बेमौसम बारिश से उन्हें पुरे माह 8 से 10 दिन काम मिल पाया और वह भी अन्य दिनों के दैनिक व्यय मे खत्म हो गया जैसे तैसे बारिश से पीछा छूटा और नियमित मजदूरी मिलने की आस जगी तो कोरोना के कारण लॉकडाउन घोषित कर दिया। शुरुआत 4-5 दिन तो ठेकेदार ने भोजन पानी की व्यवस्था की लेकिन उसके बाद ठेकेदार ने भी भोजन देने से मना कर दिया उसके बाद हमने जो कुछ भी मजदूरी करके बचत की वह अपने भोजन पानी मे खर्च करदी और भोजन पानी के आभाव मे भूखे मरने की नौबत आ गयी और हमारा पैसा भी खर्च हो गया उसके बाद हमने ठेकेदार से मदद की गुहार लगायी और उसे भरोसा दिलाया की अगर आप हमें घर पहुंचा देंगे तो हम अगले वर्ष आपके यहाँ मजदूरी करने आएंगे और आपका किराया का पैसा मजदूरी कर चुकता करदेंगे काफी मिन्नते करने के बाद ठेकेदार ने एक पिकअप गाडी से आगरा से हमें वापस अपने घर भेजनें कि व्यवस्था कर दी।

घर वापसी का दर्दनाक सफर – ठेकेदार ने एक पिकअप गाडी से आगरा से हमें वापस भेजा जिससे हम काफी खुश थे लेकिन वह खुशी ज्यादा देर तक ना रही और हमें धौलपुर चम्बल नदी के पुल पर पुलिस ने रोक लिया और आगे जाने देने से मना कर दिया हमें वहा चेकिंग के लिये 7-8 घंटे तक रोके रखा हमारे पास भोजन की व्यवस्था नहीं थी और साथ मे छोटे छोटे बच्चे थे जो भूख से विलख रहे थे ऐसी स्तिथि मे हमने अन्य मजदूर साथियो के साथ पुलिस वालो से कहा की हमें अपने घर भेजो नहीं तो हम परिवार सहित भूंखे मर जायेगें, उसके बाद कुछ स्थानीय लोगो के साथ साथ पुलिस वालो ने भोजन व्यवस्था की और वहा रात्रि विश्राम के बाद सुबह एक बस द्वारा मुरैना जिले के सबलगढ़ तक छोड़ दिया। सबलगढ़ की पुलिस ने हमें आगे नहीं जाने दिया और कोरोना चेकअप कराने का कहकर सबलगढ़ रोक लिया गया वहा पर डाक्टर व नर्स की टीम द्वारा हमारा स्वास्थ्य परीक्षण किया और सभी के हाथ पर स्वास्थ्य परिक्षण सम्बंधित सील लगायी जिसमे पूरा दिन गुजर गया और एक रात सबलगढ़ गुजारी। अगले दिन सुबह सबलगढ़ से आगे जाने की कोई व्यवस्था नहीं की जिसके कारण हमें सबलगढ़ से पैदल ही निकलना पड़ा पैदल चलने मे छोटे छोटे बच्चे और कुछ जरुरी सामान होने के कारण काफी परेशानी आ रही थी इस कारण हमने आलू खुदाई के दौरान खेत मालिक से जो 10-12 किलो आलू मिला जिसे घर के उपयोग के लिए लेकर आये उसके साथ कुछ और उपयोगी सामग्री को रास्ते मे ही फेकना पड़ा लगातार 2 दिन लगभग 100 किलोमीटर भूखे प्यासे छोटे छोटे बच्चों के साथ पैदल चलकर अपने गृह गांव गोठरा पहुंचे घर पहुंचकर हमने राहत कि सांस ली।

नेतराम लगभग 3 माह के लम्बे संघर्ष के बाद अपने घर पहुंचा है घर पहुंचने पर भी प्राकृतिक आपदा ने पीछा नहीं छोड़ा है उसके आने से पूर्व ही तूफान से उसकी झोपड़ी टूट गयी अभी घर मे राशन की व्यवस्था नहीं है। अभी जो एक-दो दिन मजदूरी मिल जाती है उससे घर का कम चल रहा है। नेतराम का कहना है की आगामी 4 माह बरसात के है उसमे मजदूरी मिलेगी नहीं घर भी टूटा है साथ मे छोटे छोटे बच्चे है जो भी मजदूरी से कमाया वह कोरोना वायरस से घर वापसी मे खत्म हो गया बच्चे इस परेशानी के कारण काफी कमजोर हो गए कोरोना से तो हम बच गए लेकिन आगे 4 माह बरसात के कैसे निकलेंगे यह चिंता हमें सताए जा रही है

खेत मालिक ने नहीं दी मजदूरी,गॉव से 20000 का कर्ज खाते में ट्रांस्फर कराया तब पहॅचे अपने गॉव।

आरती शर्मा,श्योपुर

श्योपुर जिला मुख्यालय से 17 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ग्राम सोई का से 26 वर्षीय कमल गरीब परिवार का सदस्य जिसके परिवार में 5 सदस्य माता, पिता, भाई और छोटी बहन आदि की जिम्मेदारी है। परिवार पर मात्र 2 बीघा असिंचित जमीन है जिससे मात्र खरीफ की एक फसल बमुश्किल ले पाते हैं। पिता की मजबूरी को देख उसने पढ़ने की उम्र में अपने हाथ की कलम को छोंड दिया और पिता के साथ मजदूरी की राह पर चल पड़ा क्यों कि कमल की बहन की शादी ओर छोटा भाई की पढ़ाई की जिम्मदारियां पिता और बड़ा भाई के कंधे पर थी। कमल का कहना था कि “बहन कि शादी के लिए जो जमीन थी वो भी पैसे उधार लेकर गिरबी रख दी थी फिर हमारे पास कोई चारा नहीं बचा था मजदूरी हर रोज नहीं मिल पाती थी साथ ही छोटा भाई सुरेश जो पढ़ाई के लिए अजमेर रहता था उसके लिए माह में जितने दिन मजदूरी करते थे उसका पैसा इकट्ठा कर उसके पास भेज देते थे। भाई का सपना था मेरे आंखों के सामने की वो सरकारी नौकरी लग जाए तो हम सब की जिंदगी सवर

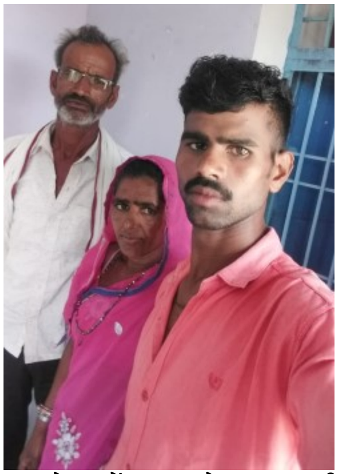

जाएगी इसलिए पिता ओर में हर रोज मजदूरी की तलाश में भटकते रहते थे। कभी मिलती तो कभी नहीं मिलती जिस दिन मजदूरी मिल जाती उसी दिन घर से रुखा सूखा खा कर निकल

पड़ते परन्तु दिन पे दिन कंधो पर जिम्मेदारियां बढ़ती ही जा रही थी। वर्ष 2015 में हम अपने परिवार के साथ गुजरात के हड़बड़ जिला में मजदूरी के लिए निकल पड़ें जिस किसान के यहां मजदूरी पर गए उसी के खेत में टपरी बनाके रहने लगे थे वहा हम दिन भर कपास को बिनते थे तब जाकर हमे किसान 200 रुपए देता था इस तरह माता पिता सहित 600 रुपए रोज मिलते थे इस तरह हमने एक माह कपास की बिनाई की तो 18 हजार रुपए पूरे माह में कमाए कुछ पैसे में अपना खर्चा चलाया कुछ छोटे भाई की पढ़ाई के लिए भेज दिए थे उसके बाद आसपास के खेत की कपास की बिनाई भी की इस तरह 2 माह मजदूरी चलने के बाद फिर बैठ गए। कुछ समय के बाद हरवीर सिंह की जमीन करने लगे रबी में गेहूं खरीब में धान या कपास करने लगे जो भी फसल होती थी उसमे हमे किसान हरवीर सिंह चोथा हिस्सा देता था जिसमें हम अपने परिवार का खर्चा ओर भाई का पढ़ाई का खर्चा चलाते थे जब फसल की कटाई हो जाती तो हम कुछ समय के लिए अपने घर सोई आ जाते फिर बारिश का मौसम शुरू होता वापस गुजरात मॉराजी जिले के लिए निकल जाते इस तरह 5 वर्ष से अच्छी जिंदगी निकल रही थी।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी गेहूं की फसल की कटाई चल रही थी फसल तैयार भी नहीं हुई थी परन्तु कोराना महामारी का प्रकोप बढ़ जाने के कारण पूरा देश बंद कर दिया तो हमे अपने घर की चिंता सताने लगी जैसे तैसे फसल तैयार तो हो गई थी परन्तु हरवीर सिंह का अनाज हुआ था उसको बेच नहीं पाया क्यों की मंडी बंद थी इस कारण पैसे नहीं होने के कारण पास में बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था अनाज तो पास में था परन्तु अन्य सामग्री के लिए पैसे नहीं थे जो पैसे थे वो धीरे धीरे खर्च होते नजर आ रहे थे। हरवीर सिंह ने मुंह तोड़ जवाब दे दिया की तुम लोग घर चल जाओ क्यों की अब पता नहीं कब फसल बिकेगी कब पैसा आएगा मेरे पास भी नहीं है में भी मदद नहीं कर सकता इसलिए तुम निकल। जाओ हरवीर की बात सुनकर में बहुत दुखी हो गया था मेरे साथ मेरे माता पिता की जिम्मेदारियां थी कुछ समझ नहीं आ रहा था रास्ते भी सब बंद कर दिए थे क्यों कि कोराना बीमारी बढ़ती ही जा रही थी कोई मदद भी नहीं कर रहा था।

एक दिन पास का गांव ढेगदा के 13 लोग जो मोराजि जिला के पास के गांव में ठहरे हुए थे राजू का फोन मेरे पास आया कि हम सब भी परिवार सहित यही है बहुत परेशानियां आ रही है उसी समय एकता परिषद की आरती दीदी का फोन आया उन्होंने हमारी स्थिति के बारे में जाना की हम लोग यहां फंसे हुए है। उन्होने कहा कि तुम लोग एसडीएम कार्यालय जाओ बात करो कि हमे हमारे घर जाना है तो में अपने माता पिता के साथ एसडीएम सर के पास गया तो वहा से मुझे भगा दिया, मिलने नहीं दिया कहा सर नहीं है में उदास होकर वापस आ गया और घर जाने की आश वो टूट गई।

दूसरे दिन मैने आरती दीदी से फिर बात कि तो उन्होंने कहा बाहर फंसे हुए मजदूरों का ऑनलाइन पंजीयन हो रहा जिससे आपको सरकार की ओर से सहायता मिलेगी। हमने किसी तरह अपना पंजीयन कराया साथ ही एसडीएम कार्यलय में बात करके हमारा ई पास बनाया गया। पास मिलने के बाद मेरी खुशी इतनी बढ गई की मेरी आंखे घर जाने की खुशी में नम हो गई अब पास तो बन गया पर घर आने के लाले पड़ रहे थे, ना कोई बस चल रही थी ना ही ट्रेन। एक गाड़ी वाले बात की वो 18 हजार मांग रहा था इतने पैसे मेरे पास नहीं थे की स्वयं गाड़ी करके घर पहुंच जाऊं। फिर मैने हरवीर सिंह से कहां मुझे पैसे चाहिये आप मेरे हिस्से जो भी पैसे आए उसको अनाज में से काट लेना परन्तु हरवीर सिंह ने देने से मना कर दिया कि मेरे पास नहीं फिर मैने सोई अपने दोस्त रघुवीर के पास फोन करके पूरी समस्या बताई तो उसने मुझे उधार पैसे मेरे खाते में ट्रांसफर किया। और हमने 400 किलो मीटर 24 घंटे का सफर तय किया जिसमें में राजस्थान ओर गुजरात बॉडर पर 6 घंटे रोक कोविड की जांच करा हमे अपने घर की ओर रवाना किया गया। में अपने माता पिता के साथ 17 हजार में गाड़ी करके घर तक पहुंच पाया घर की ओर देख मेरी आंखे नम हो गई की घर तो घर ही होता है” कमल

एकता परिषद, संसाधन केन्द्र, पुरानी छावनी थाने के पास, ए.बी. रोड पुरानी छावनी ग्वालियर, सम्पर्क - 9993592425
Contact Persons : Ran Singh Parmar 9993592425, Email: mgsa.india@gmail.com ,
www.mahatmagandhisevaashram.org, www.ektaparishad.org